ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 1 — एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 नवम्बर, 2020 से रविवार 22 नवम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 — सृष्टि सम्वत् 196085312
दयानन्दाब्द : 197 — वार्षिक शुल्क : 250 रुपये — पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

137वें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली) पर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में वर्चुअल आयोजन

महर्षि दयानन्द के कार्यों को और अधिक शक्ति से करने के संकल्प का दिन है निर्वाण दिवस

अज्ञानरूपी अंधकार में ज्ञान का दीपक जलाकर महर्षि दयानन्द ने मनाई थी वास्तविक दीपावली

आज फिर उस उजियारे पर पुन: अंधकार की चादर चढ़ती जा रही है - और बड़ी योजनाओं के साथ कार्य करने की आवश्यकता

मेरे परिवार में आर्यसमाज, मेरी पहचान समाज में एक आर्यसमाजी के रूप में और मेरा योगदान आर्यसमाज की उन्नति के लिए है या नहीं - ये विचारना आज जरूरी- विनय आर्य

नई दिल्ली 13 नवंबर, 20। आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित ऋषि निर्वाण दिवस का आयोजन एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पश्चिमी पंजाबी बाग नई दिल्ली में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में सबसे पहले, माता शांति देवी कन्या गुरुकुल, सैनिक विहार की ब्रह्मचारिणियों ने ईश्वर स्तुति, प्रार्थना उपासना मंत्रों का पाठ किया, तदुपरांत सुश्री संगीता आर्या जी ने ईश्वर भक्ति और महर्षि की महिमा का गुणगान करते हुए समर्पित भाव से बहुत सुंदर

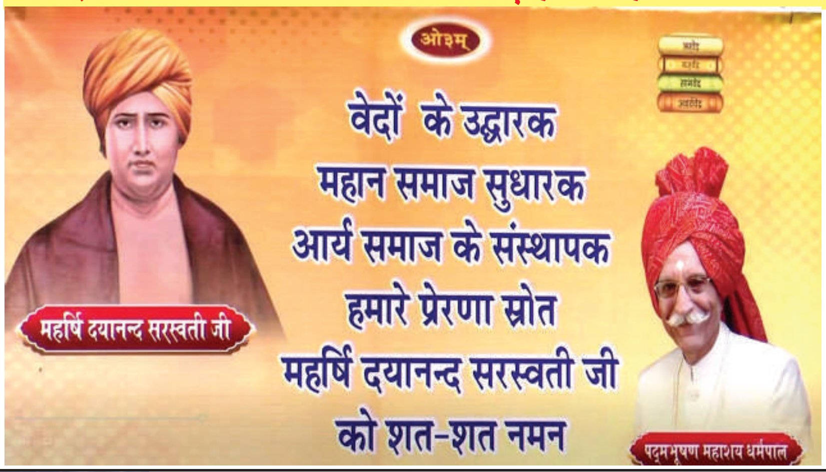

भजन सुनाए, उनका सहयोग श्री सुनील जी और श्री विशाल जी कर रहे थे। भजनों के उपरांत श्री सत्यानंद आर्य जी, वॉइस प्रेसिडेंट एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, ने महर्षि को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा-

नव विवाहित युवा और बालक-बालिकाओं ने सामूहिक यज्ञ के साथ ऋषि दयानन्द के कार्यों को करने का लिया संकल्प

आज का दिन आर्य समाज के लिए बड़ा महत्व का दिन है। सन 1883 की दीपावली के दिन महर्षि दयानंद सरस्वती का निर्वाण हुआ था। 19वीं शताब्दी में इस महापुरुष ने देश में सामाजिक क्रांति, शिक्षा क्रांति, राजनीतिक चेतना के द्वारा देश को जागृत किया। हम उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। देश उस समय पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में पाखंड और अंधविश्वास के विरूद्ध लंबी लडाई लड़के और राजनीतिक चेतना जगाकर कर भारत माता की स्वतन्त्रता का बिगुल बजा दिया और स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है का नारा दिया।

श्री कीर्ति शर्मा जी, कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा उपप्रधान आर्य केंद्रीय सभा, ने अपने विचार रखते हुए कहा- आर्य बन्धुओं, बहनों, बेटियों और बेटों के साथ आर्य सन्देश टी.वी. के माध्यम से जो लाइव कार्यक्रम देख रहे हैं, उन सभी को मेरा शत-शत नमन। 19वी शताब्दी में राष्ट्रीय

- *शेष पृष्ठ 5 पर*

सभा के पूर्णकालिक कार्यकर्ता - सभा की शक्ति : मिलकर बढ़ाएं आर्यसमाज के कार्यों को

पहली बार 90 साथियों को एक साथ देखकर मन प्रसन्न है

- धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीपावली यज्ञ सम्पन्न

महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सैन्टर, सहयोग, मशाल, प्रचारक प्रकल्प, हवन उत्थान, सामान्य प्रशासन आदि सभी विभागों के साथियों ने यज्ञ में आहुति देकर महर्षि दयानन्द के कार्यों को बागे बढ़ाने का संकल्प लिया

12 अक्टूबर 2020, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज 15 हनुमान रोड के प्रांगण में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 137 में निर्वाण दिवस पर दीपावली यज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी, श्री कृपाल सिंह आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री एस.पी. सिंह जी, श्री संजय सिंह जी, अ.भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर सहित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, अ. भा.दयानंद सेवा श्रम संघ, महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा संस्थान, सहयोग, महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सैंटर, महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प, हवन उत्थान समिति इत्यादि से

- *शेष पृष्ठ 5 पर*

वेद-स्वाध्याय

सब कुछ देने में समर्थ

ईशे ह्य ग्निरमृतस्य भूरेरीशे राय: सुवीर्यस्य दातो:।
मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सव: परि षदाम मादुव:।। - 7।4।6
ऋषि: **वसिष्ठ:**।। देवता - **अग्नि:**।। छन्द: **स्वाराट्पङ्क्ति**।।

शब्दार्थ - **अग्नि:** = परमेश्वर **हि** = निश्चय से **भूरे:** = बहुत प्रकार के **अमृतस्य** = अमरपन के, आध्यात्मिक ऐश्वर्य के **दातो:** = देने में **ईशे** = समर्थ है और **सुवीर्यस्य** = सुन्दर वीरतासहित **राय:** = धन के, भौतिक ऐश्वर्य के देने में **ईशे** = समर्थ है, परन्तु **सहसावन्** = हे सर्वशक्तिमन्! बलवन्! **वयम्** = हम **त्वा** = तेरी **अवीरा:** = वीरतारहित, कायर होकर **मा** = मत **परिषदाम** = उपासना करें **अप्सव:** = कुरूप, विकृत होकर **मा** = मत उपासना करें और **अदुव:** = असेवक होकर **मा** = मत उपासना करें।

विनय - हे अग्ने! हम तुम्हारी बहुत-सी विफल उपासना करते हैं। तुम तो सर्वशक्तिमान् हो, हमें सब-कुछ दे सकते हो। हमें प्रभूत अमृत, विविध प्रकार का आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ हो, सुवीरता आदि सहित सब प्रकार का भौतिक धन देने में समर्थ हो, परन्तु हम ही हैं जो तुम्हारी आराधना करने के अयोग्य हैं, अतएव तुम सर्वदाता से भी हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। हम कितने मूर्ख हैं कि निवीर्य होकर, विकारयुक्त होकर और सेवा-रहित होकर तुम्हारा भजन करना चाहते हैं! भला, हम कायर लोग, हे सहसावन्! तुम्हारी क्या उपासना कर सकते हैं? हम विकारयुक्त, मलिन हृदयों वाले तुम्हारी क्या उपासना करेंगे? हम सेवारहित स्वार्थी पुरुष तुम्हारी उपासना से क्या लाभ प्राप्त करेंगे? अत: हमने आज से निश्चय किया है कि अब हम वीर्यहीन, विकृत और असेवक होकर कभी तुम्हारी उपासना में नहीं बैठेंगे। हम सब कमजोरियों को हटाकर, निर्भय वीर होकर तुम्हारे सच्चे उपासक बनेंगे, सब काम-क्रोधादि मलिनताओं को दूर करके शुद्ध-सुरूप बनकर तुम्हारी आराधना करने बैठेंगे और दिन-रात निरन्तर सेवा-कार्य करते हुए ही अब हम प्रात: सायं तुम्हारा भजन किया करेंगे। सचमुच तभी हम तुम्हारे पास बैठने के योग्य होंगे, तुम्हारी उपासना करने के अधिकारी बनेंगे और तभी उपासना द्वारा तुमसे अमृतत्व आदि आध्यात्मिक ऐश्वर्यों को, वीरता आदि सद्गुणों को तथा अन्य भौतिक ऐश्वर्यों को भी प्राप्त कर सकेंगे।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

जम्मू-कश्मीर में धारा 370 की वापसी के लिए गुपकार समझौता

घाटी को फिर से सुलगाने की कोशिश

......धारा 370 कश्मीर में एक अनुच्छेद ही नहीं बल्कि रोजगार का एक बड़ा साधन भी था। हमेशा धारा 370 की आड़ में वहां आतंकवाद बढ़ता चला गया, लोगों को बरगलाया गया। परिणाम यह रहा कि वहां की जनता को गरीबी के अलावा कुछ नहीं मिला। देशभर के बाकी राज्यों में आतंकवाद क्यों नहीं पनपा क्योंकि वहां 370 नहीं थी जो अलगाववाद का मूल पैदा करती रही थी। दिल्ली हमेशा श्रीनगर को पैसा भेजती रही लेकिन श्रीनगर से दिल्ली को हमेशा जवानों के पार्थिव शरीर और धमकियां ही मिलती रहीं। अब जब पिछले वर्ष दिल्ली और श्रीनगर के बीच की दीवार 370 गिर गयी तो ये लोग अब दुबारा उसी दीवार की चाह में साझा घोषणापत्र जारी कर रहे हैं। आतंक को फिर से पैदा करने की कोशिश की जा रही है। घाटी में सत्तारूढ़ पार्टी बीजेपी से जुड़े नेताओं की हत्या तक की जा रही हैं। लोगों में खौफ पैदा कर राज्य को फिर से मजहबी आग में झोकना चाह रहे हैं।........

व कश्मीर की घाटी और महबूबा मुफ्ती के बयान कोई नई बात नहीं है, आतंकवाद की दुकान से उनके बाप दादा ने रोटी खाई अब महबूबा भी उसी दुकान का शटर उठाने की फिराक में दिख रही है। महबूबा मुफ्ती ने कहा है कि आज घाटी में युवाओं के पास नौकरी नहीं है, इसलिए उनके सामने हथियार उठाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है।इसलिए आतंकी कैंप में भी भर्तियां बढ़ने लगी हैं।

आंकड़े कहते हैं कि 29 साल का अरसा घाटी में 46000 लोगों को लील गया। इनमें 24000 आतंकी और 7000 जवान भी हैं। अगर 5 आतंकी मारे गए तो उनके बदले में एक सुरक्षाकर्मी की जान कश्मीर में गई है। मौत का चक्र यहीं नहीं रुका। मौत का आंकड़ा दिनोंदिन अपनी रफ्तार को तेज करता गया परिणामस्वरूप आतंकियों के साथ-साथ नागरिक भी आतंकियों की गोलियों का शिकार हुए। अगर इस त्रासदी का गंभीरता से विश्लेषण करें तो पर्दे के पीछे घाटी के पांच या सात परिवार ही दिखाई देते हैं, जो आज गुपकार गैंग बनाकर बैठे हैं।

असल में समस्या क्या है? समस्या का मूल कारण क्या है? क्या वजह है जो महबूबा जैसे घाटी के नेता आतंक को जिन्दा करना चाहते हैं? क्योंकि रोशनी एक्ट या रोशनी स्कीम जैसा नाम सुनकर अंदाजा लगाया जा सकता है। बहुत से लोग सोचते होंगे कि यह यह बिजली से जुड़ी कोई योजना होगी। जी नहीं! जम्मू कश्मीर में यह अंधेरगर्दी से जुड़े एक घोटाले का नाम है। जो रियल एस्टेट सेक्टर में सरकारी स्तर पर अरबों रुपये के घपले को अंजाम देने के लिए यह एक्ट लाया गया था। इस भूमि घोटाले के तहत हुए तमाम आवंटन और प्रक्रियाएं निरस्त कर दी गई हैं और हाई कोर्ट ने इसे पूरी तरह गैर कानूनी और असंवैधानिक करार दे दिया है।

जम्मू कश्मीर के इतिहास में 25,000 करोड़ रुपये के सबसे बड़े घोटाले के तौर पर देखे जा रहे इस एक्ट को सिरे से खारिज कर दिया गया है और हाई कोर्ट ने इसकी सीबीआई जांच के आदेश दे दिए हैं। इस कारण इनके पेट में मरोड़ है। फारुक अब्दुल्ला सरकार द्वारा 2001 में लाई गई इस स्कीम के तहत 1990 से हुए अतिक्रमणों को इस एक्ट के दायरे में कट ऑफ सेट किया गया था। अंधेर ये था कि जमीन को मार्केट वैल्यू के सिर्फ 20 फीसदी दर पर सरकार ने कब्जेदारों को सौंपा। यानी कुल मिलाकर इससे 25 हजार करोड़ रुपये का घोटाला होने की बात सामने आई। अंधेर ये भी रहा कि अब्दुल्ला सरकार के बाद की सरकारों ने भी इसका फायदा उठाया। चाहे गुलाम नबी की सरकार रही हो या मुफ्ती की। हर उस व्यक्ति को फायदा पहुंचा। मंत्रियों, कारोबारियों, नौकरशाहों और इन सबके रिश्तेदारों या करीबियों को जमीनें कौड़ियों के भाव मिलीं। हसीब दरबू, मेहबूब बेग, मुश्ताक अहमद चाया, शन अमला, खुर्शीद अहमद गनी और तनवीर जहान जैसे प्रभावशाली नाम इस लिस्ट में सामने आ चुके हैं।

इस घोटाले की गहराई की अंदाजा इस बात से लगाइए कि श्रीनगर शहर के बीचों बीच खीदमत ट्रस्ट के नाम से कांग्रेस के पास कीमती जमीन का मालिकाना हक पहुंचा, तो नेशनल कॉन्फ्रेंस का भव्य मुख्यालय तक ऐसी ही जमीन पर बना हुआ है, जो इस भूमि घोटाले से तकरीबन मुफ्त के दाम हथियाई गई।

यानि गैरकानूनी कानून बनाकर कैसे करोड़ों के वारे न्यारे किए जाते हैं, इसकी मिसाल बनी रोशनी स्कीम से जम्मू कश्मीर की कई सरकारों ने जेबें भरीं। कांग्रेस, एनसी, पीडीपी की जो भव्य इमारतें खड़ी हैं, अब उनके नीचे से जमीन खिसक चुकी है?

आखिर ऐसा क्या हुआ जो नजरबंदी हटते ही कश्मीर के सभी दल एक जगह गुपकार घोषणापत्र को लेकर खड़े हो गये? इसका भी जवाब एक साल पीछे मिलेगा।

क्योंकि अधीर रंजन चौधरी के सवाल पर जवाब देते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में कहा था कि कश्मीर के तीन परिवारों ने कश्मीर को जमकर लूटा पूरे देश को पता है कि वो तीन परिवार कौन हैं। जन कल्याण का जो पैसा केंद्र से राज्य में भेजा गया उससे जनता का पूरा विकास नहीं हुआ। क्योंकि 370 की वजह से भ्रष्टाचार चलता रहा। यह पैसा कहां गया, इसी 370 को ढाल बनाकर भ्रष्टाचार करने का काम वहां के नेताओं ने किया है।

असल में धारा 370 कश्मीर में एक अनुच्छेद ही नहीं बल्कि रोजगार का एक बड़ा साधन भी था। हमेशा धारा 370 की आड़ में वहां आतंकवाद बढ़ता चला गया, लोगों को बरगलाया गया। परिणाम यह रहा कि वहां की जनता को गरीबी के अलावा कुछ नहीं मिला। देशभर के बाकी राज्यों में आतंकवाद क्यों नहीं पनपा क्योंकि वहां 370 नहीं थी जो अलगाववाद का मूल पैदा करती रही थी। दिल्ली हमेशा श्रीनगर को पैसा भेजती रही लेकिन श्रीनगर से दिल्ली को हमेशा जवानों के पार्थिव शरीर और धमकियां ही मिलती रहीं। अब जब पिछले वर्ष दिल्ली और श्रीनगर के बीच की दीवार 370 गिर गयी तो ये लोग अब दुबारा उसी दीवार की चाह में साझा घोषणापत्र जारी कर रहे हैं। आतंक को फिर से पैदा करने की कोशिश की जा रही है। घाटी में सत्तारूढ़ पार्टी बीजेपी से जुड़े नेताओं की हत्या तक की जा रही हैं। लोगों में खौफ पैदा कर राज्य को फिर से मजहबी आग में झोकना चाह रहे हैं।

कभी एक दूसरे के धुरविरोधी रहे ये आज सभी दलों के नेताओं को न तो जम्मू-कश्मीर की चिंता है और न ही 370 की। बल्कि अब ये लोग केन्द्रीय शासन में खुलने वाली फाइलों से परेशान हैं। उपराज्यपाल आते ही वहां ठंड में पसीने आने लगे हैं और अब फाइलें खुल रही हैं। परिणाम भी दिख रहा है अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी ने हुर्रियत कॉन्फ्रेंस से इस्तीफा दे दिया हैं, जम्मू कश्मीर का पुलिस बल सेना के साथ मिलकर आतंक से लड़ रहा है, सरपंच और पंचों के जरिए जम्मू कश्मीर में विकास के कार्य करवाए जा रहे हैं। केंद्रीय परियोजनाएं भी खूब शुरू हो रही हैं। युवा सरपंचों को महत्व दिया गया तथा सरपंचों को प्रतिमाह 2500 और पंचों को 1000 की प्रोत्साहन राशि भी दी जाने की शुरुआत कर दी गई है। ग्राम

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

महात्मा गांधी की दोहरी नीति के विषय में उनके पौत्र का ट्वीट

गांधी जी पर गांधी के पोते के सवाल

मोहन दास कर्मचंद गाँधी जी एक बार फिर से चर्चा का विषय बन गये हैं। इस बार इस महान अखंड ब्रह्मचारी पर सवाल उठाने वाले कोई ओर नहीं बल्कि उन्हीं के पड़पोते तुषार गांधी है। तुषार गांधी ने कई दिन पहले एक ट्वीट करके कहा कि गांधी जी हमेशा सही नहीं होते थे। उन्होंने जिस तरह अपने बेटे मणिलाल के एक मुस्लिम लड़की से प्रेम विवाह पर रोक लगाई, उस मामले में वो गलत थे।

तुषार गाँधी का ट्वीट इस बात की गवाही दे रहा है कि गांधीजी देश में तो मुस्लिमों को बसाना चाहते थे लेकिन अपने घर में नहीं! क्या गाँधी जी इस देश को अपना घर नहीं मानते थे क्योंकि जब उनका बेटा मणिलाल मुस्लिम लड़की फातिमा से शादी करना चाहता था तो गाँधी जी ने साफ मना कर दिया था की हम घर में नहीं घुसने देंगे। इससे मणिलाल काफी नाराज भी हुआ था।

अब यहाँ से गाँधी जी का दोहरा चरित्र समझिये। जिन्ना ने खुद मुस्लिम होने के बावजूद मुस्लिम लड़की से शादी नहीं की थी, जिन्ना ने एक पारसी लड़की रतनबाई उर्फ रूटी से ब्याह रचाया था। तब गाँधी जी ने कोई विरोध नहीं किया। लियाकत अली खान ने प्रतिष्ठित कुमायुंनी ब्राह्मण परिवार की लड़की शीला ईरीन पंत से लव जिहाद किया गाँधी जी खामोश रहे। बल्कि चार जून, 1931 को 'यंग इंडिया' में गांधी लिखते हैं अपने धर्म से बाहर ब्याह करने का सवाल जुदा है। इसमें जब तक स्त्री-पुरुष में से हरेक को अपने-अपने धर्म का पालन करने की छूट होती है, तब तक नैतिक दृष्टि से मैं

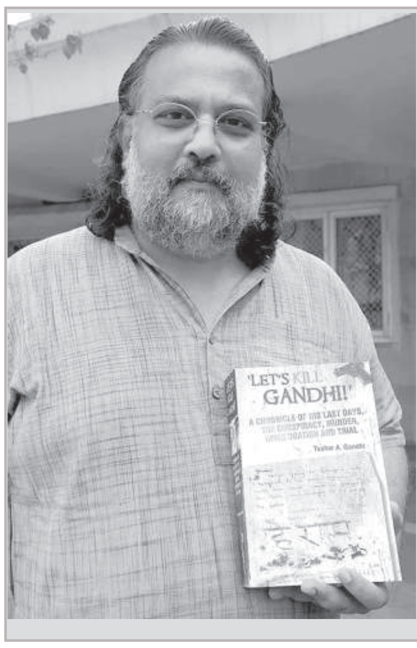

...... मणिलाल को भरोसा था कि वो टिम्मी उर्फ फातिमा से शादी कर लेंगे। हालांकि उन्हें धीरे-धीरे लगने लगा कि इसमें कई बाधाएं थीं। कस्तूरबा दूसरे धर्म में शादी की सख्त विरोधी थीं। धर्म क्या वो तो दूसरी जाति में भी विवाह के पक्ष में नहीं थीं। वह ये बात कतई पचा नहीं सकती थीं कि उनकी बहू दूसरे धर्म और जाति की हो। खैर मणिलाल ने 1926 में अपने से छोटे भाई रामदास के जरिए पिता को संदेश भेजा कि वो फातिमा से शादी करना चाहते हैं। फातिमा ही नहीं उसके भाई बहन और परिवार का गांधीजी के परिवार से दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान बहुत आत्मीय रिश्ता था। लिहाजा मणि को उम्मीद थी कि पिता मान जाएंगे, लेकिन पिता ने जवाबी तौर पर जो पत्र भेजा, वो किसी धमाके से कम नहीं था। गांधीजी ने लिखा 'ये अधर्म होगा'। ......

ऐसे विवाह में कोई आपत्ति नहीं समझता। परंतु मैं नहीं मानता कि ऐसे विवाह संबंधों के फलस्वरूप शांति कायम होगी।

इसी बीच एक दिलचस्प घटना घटी और गाँधी का चरित्र फिर उगाजर हो गया। 1933 में गांधी के अपने ही दो निकट के परिचितों के अंतर्जातीय विवाह का प्रश्न सामने आ गया। पुरुष भारतीय हिंदू था और महिला जर्मनी की एक रोमन कैथोलिक ईसाई थीं। पत्नी अपने बच्चों की परवरिश रोमन-कैथोलिक संस्कृति के आधार पर करना चाहती थी। जब इस बारे में गांधीजी की राय पूछी गई तो उन्होंने 16 नवंबर, 1933 को एक पत्र में लिखा 'मेरा विश्वास है कि जब पति और पत्नी भिन्न मतों के मानने वाले हों, तो उनकी संतान को पिता के धार्मिक संस्कारों के अनुसार पाला जाना चाहिए। इस बात के पक्ष में मेरी राय में ठोस धार्मिक और दार्शनिक कारण हैं।

लेकिन 10 साल बाद इनके इस महान दर्शन ने गड्ढे में कूदकर आत्महत्या कर ली क्योंकि अबकी बार गांधी के सामने यही प्रश्न एक दूसरे रूप में आकर खड़ा हो गया। वह घटना थी नेहरू की लाडली बेटी इंदिरा की शादी एक पारसी से होनी थी। अब लोगों ने पत्र भेजकर गाँधी जी से पूछा क्या इंदिरा के बच्चे पारसी होंगे क्योंकि आपके ठोस धार्मिक और दार्शनिक कारण के चलते पिता का धर्म ही संतान को मानना चाहिए।

तब गाँधी जी जवाब देते हुए लिखते है फीरोज गांधी का नेहरू परिवार के साथ बरसों पुराना घराना है। कमला नेहरू की बीमारी में श्री फीरोज गांधी ने उनकी तीमारदारी की थी। वे उनके लिए पुत्रवत् यानि बेटे जैसे थे। यूरोप में इंदिरा की बीमारी के वक्त भी उनकी बड़ी मदद रही थी। यहीं से दोनों में स्वाभाविक मित्रता पैदा हुई। यह मित्रता संयमवाली रही। इसमें से आपसी चाह पैदा हुई। मगर दोनों में से किसी ने यह नहीं चाहा कि वे जवाहरलाल नेहरू की सम्मति और आशीर्वाद के बिना विवाह कर लें। जब जवाहरलाल को विश्वास हो गया कि इस आकर्षण की तह में स्थिरता है, तभी उन्होंने अपनी स्वीकृति दी। लोग जानते हैं कि नेहरू-परिवार के साथ मेरा कितना घनिष्ठ संबंध है। मैंने दोनों पक्षों से बातचीत भी की। अगर इस सगाई पर सहमति न व्यक्त की जाती, तो यह क्रूरता होती।

यानि अपने बेटे के साथ क्रूरता कर दी पर नेहरु जी की बेटी के साथ नहीं की, कमाल के थे देश के बापू, असल में गाँधी की दोहरी जबान और ये दोहरा चरित्र उजागर किया है महात्मा गांधी की पड़पोती उमा धूपेलिया ने। उमा ने साल 2006 में मणिलाल गांधी की जीवनी 'मणिलाल गांधी गांधीज प्रीसनर ?' नाम से लिखी थी। उमा वेस्टर्न केप यूनिवर्सिटी, साउथ अफ्रीका में हिस्ट्री की प्रोफेसर हैं। इनकी एक बेटी सपना है जो इन दिनों दक्षिण अफ्रीका के शहर केपटाउन में भारतवंशियों पर एक किताब पर काम कर रही हैं।

दरअसल गांधीजी अपने जीवन में लंबे समय तक ना केवल अंतर धार्मिक बल्कि अंतर जातीय विवाह के भी खिलाफ थे। उन्होंने अगर अपने दूसरे बेटे मणिलाल को एक मुस्लिम लड़की से प्रेम विवाह करने से रोका तो सबसे छोटे बेटे देवदास की भी अंतर जातीय शादी कई साल के लिए ये सोचकर रोक दी थी, तब तक उनके दिमाग से प्रेम विवाह की जिद उतर जाएगी।

खैर! इन की दूसरी संतान मणिलाल को एक मुस्लिम लड़की से प्यार हो गया। दोनों का प्रेम करीब एक दशक तक चला। इस लड़की से शादी करना चाहते थे। जब उन्होंने गांधीजी से अनुमति मांगी तो उन्होंने कई तर्क देते हुए इस शादी से साफ मना कर दिया। मणिलाल को गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका में विश्वस्त सहयोगी युसुफ गुल की बेटी फातिमा से प्यार हो गया था। वे लोग बचपन से साथ रहे थे। काफी समय साथ गुजरता था, लिहाजा समय के साथ करीब आ गए। चूंकि बचपन से ही गांधीजी ने अपने बेटों को सिखाया था कि सभी धर्म समान हैं, हमें घुलमिलकर रहना चाहिए, लिहाजा बच्चों के दिमाग में कभी आया ही नहीं कि धर्म भी एक दीवार हो सकती है।

लेकिन मणिलाल को भरोसा था कि वो टिम्मी उर्फ फातिमा से शादी कर लेंगे। हालांकि उन्हें धीरे-धीरे लगने लगा कि इसमें कई बाधाएं थीं। कस्तूरबा दूसरे धर्म में शादी की सख्त विरोधी थीं। धर्म क्या वो तो दूसरी जाति में भी विवाह के पक्ष में नहीं थीं। वह ये बात कतई पचा नहीं सकती थीं कि उनकी बहू दूसरे धर्म और जाति की हो। खैर मणिलाल ने 1926 में अपने से छोटे भाई रामदास के जरिए पिता को संदेश भेजा कि वो फातिमा से शादी करना चाहते हैं। फातिमा ही नहीं उसके भाई बहन और परिवार का गांधीजी के परिवार से दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान बहुत आत्मीय रिश्ता था। लिहाजा मणि को उम्मीद थी कि पिता मान जाएंगे, लेकिन पिता ने जवाबी तौर पर जो पत्र भेजा, वो किसी धमाके से कम नहीं था।

गांधीजी ने लिखा 'ये अधर्म होगा'। पत्र ने मणि के सारे सपने को ध्वस्त कर दिया। उसमें लिखा, अगर तुम हिंदू हो और तुमने फातिमा से शादी कर ली और शादी के बाद भी वो मुस्लिम ही रही तो ये एक ही म्यान में दो तलवारों जैसा हो जाएगा। तब तुम अपनी आस्था से हाथ धो बैठोगे। जरा ये भी सोचो कि जो बच्चे पैदा होंगे, वो किस धर्म और आस्था के प्रभाव में होंगे।

ये धर्म नहीं अधर्म होगा, अगर फातिमा केवल शादी के लिए अपने धर्म को बदलना भी चाहे तो भी ठीक नहीं होगा।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

महापुरुषों की रीति

सार्वदेशिक सभा की बैठक थी। महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज प्रधान थे। पण्डित चमूपतिजी महाराज उठकर कुछ बोले। महात्माजी आवेश में थे। बोले- ''बैठ जाओ, तुम्हें कुछ पता नहीं।''

आचार्य प्रवर पण्डित चमूपति चुपचाप बैठ गये। बैठक समाप्त हुई। महात्माजी एक ऊँचे साधक थे। उनके मन में विचार आया कि उनसे कितनी भयंकर भूल हुई है। आचार्य चमूपति सरीखे अद्वितीय मेधावी विद्वान् को यह क्या कह दिया ?

महात्माजी आचार्यजी के पास गये। नम्रता से कहा, ''पण्डितजी मुझसे बड़ी भूल हुई। मैं आवेश में था। सभा-संचालन में कई बार ऐसा हो ही जाता है। मैंने आवेश में आकर कह दिया-''तुम्हें कुछ पता नहीं या तुम्हें क्या आता है।''

आचार्य प्रवर चमूपति बोले, ''ऐसी कोई बात नहीं, आपने ठीक ही कहा। आपको कहने का अधिकार है। आप हमारे ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध, महात्मा व त्यागी-तपस्वी नेता हैं।''

दोनों महापुरुषों में इस प्रकार की बातचीत हुई।

पाठकगण! इस घटना पर गम्भीरता से विचार करें। दोनों महापुरुषों के बड़प्पन व नम्रता से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। संगठन की सुदृढ़ता के लिए ऐसे सद्भावों का होना आवश्यक है। आचार्य चमूपतिजी ने ही 'सोम-सरोवर' ग्रन्थरत्न में लिखा है कि संशय में बिखेरने की शक्ति तो है, जोड़ने व पिरोने की नहीं। आज अहं के कारण, पद-लालसा व सन्देह के कारण कितने व्यक्ति हमारे संगठन को बिखेरने में लगे हुए हैं। आइए, जोड़ने की कला सीखें।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

स्वास्थ्य रक्षा

रक्तचाप व हृदय रोग – लक्षण और उपाय

हमारे शरीर में रक्तवाहिनी धमनियों में जो रक्त प्रवाह होता है, उस प्रवाह को गति हृदय से प्राप्त होती है। जो कि दिन-रात लगातार एक अनवरत पम्पिंग मशीन की भांति रक्त को पम्प करता रहता है। हृदय द्वारा उत्पन्न दबाव से रक्त धमनियों में पहुंचता है और शरीर के विभिन्न भागों को शक्ति देकर पुन: हृदय के पास लौट आता है। इस वापिस आए रक्त को हृदय अपनी विधि द्वारा शुद्ध करके पुन: शरीर में भेज देता है। इस तरह यह रक्त के आवागमन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। रक्त पर हृदय की पम्पिंग का जो दबाव पड़ता है उसे रक्तचाप कहते हैं।

सामान्य रक्तचाप एक स्वाभाविक क्रिया है लेकिन जब यह यह क्रिया असामान्य हो जाती है तब रोग बन जाता है। जब किन्हीं कारणों से यह दबाव बढ़ता है तो उसे उच्चरक्तचाप कहते हैं, तथा जब दबाव कम हो जाता है तब इसे निम्न रक्तचाप कहते हैं।

जब हृदय अपने पास इकट्ठे हुए रक्त को शरीर में भेजने के लिए सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे सिस्टोलिक रक्तचाप या

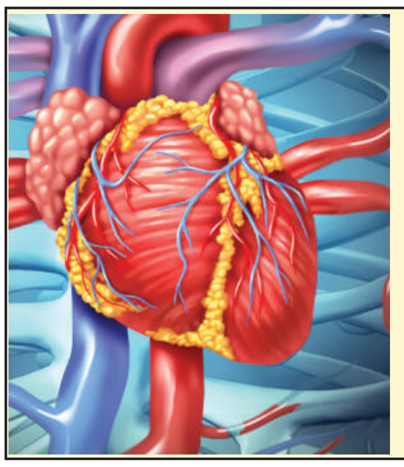

.....जब हृदय अपने पास इकट्ठे हुए रक्त को शरीर में भेजने के लिए सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे सिस्टोलिक रक्तचाप या प्रकुंचन चाप कहते हैं। शरीर से वापिस लौटे इसी रक्त को ग्रहण करने के लिए जब हृदय ढ़ीला होता है तो उस समय जो प्रेशर बनता है उसे डायस्टोल्कि प्रेशर या अनुशिथिलन रक्त चाप कहते हैं। इन क्रियाओं के सन्तुलित दबाव को रक्तचाप कहते हैं। साधारणतया बच्चों का रक्तचाप 80/50, युवकों का 120/70 तथा प्रोढ़ों का 140/90 होना सामान्य माना जाता है। ....

प्रकुंचन चाप कहते हैं। शरीर से वापिस लौटे इसी रक्त को ग्रहण करने के लिए जब हृदय ढ़ीला होता है तो उस समय जो प्रेशर बनता है उसे डायस्टोल्कि प्रेशर या अनुशिथिलन रक्त चाप कहते हैं। इन क्रियाओं के सन्तुलित दबाव को रक्तचाप कहते हैं। साधारणतया बच्चों का रक्तचाप 80/50, युवकों का 120/70 तथा प्रोढ़ों का 140/90 होना सामान्य माना जाता है। इनमें पहली बड़ी संख्या सिस्टोलिक प्रेशर तथा दूसरी छोटी संख्या डायस्टोलिक प्रेशर की सूचक है।

उच्चरक्तचाप का रोग एकदम नहीं होता। यह धीरे-धीरे आता है और कई तरह की पूर्व सूचना देकर आता है। उच्चरक्तचाप होने पर कुछ सामान्य लक्षण जैसे-सिरदर्द, सिर भारी रहना, सिर में चक्कर आना, शरीर में थकान महसूस होना, स्वभाव चिड़चिड़ा होना, किसी काम में मन न लगना, अनिद्रा, चढ़ने में सांस फूल जाना इत्यादि। उच्चरक्तचाप का यदि समय पर उपचार न किया जाए तो हार्ट अटैक, गुर्दो का रोग, लकवा तथा आंखों के कई रोग हो जाते हैं।

उच्चरक्तचाप को नियन्त्रण में लाने के लिए अधिक नमक, मिर्च-मसाले, अधिक चीनी, वसा तथा तली हुई वस्तुओं का सेवन, सिगरेट कॉफी तथा शराब का सेवन न करें। लगातार मानसिक चिन्ता, शोक, क्रोध, मोटापा, मधुमेह का रोग, गुर्दो द्वारा अपना कार्य भली भांति न करने के कारण उच्चरक्तचाप के रोग उग्ररूप धारण कर लेते हैं।

पोटैशियम युक्त भोजन, मलाई उतारा हुआ दूध, सादा दही तथा संतरे का जूस, टमाटर, पालक, केला प्रतिदिन लेने से उच्चरक्तचाप सामान्य हो जाता है।

निम्न रक्तचाप-के कई कारण हो सकते हैं, परन्तु इसको मुख्यत: तीन भागों में विभक्त किया जाता है-

पौष्टिक आहार की कमी के कारण, लम्बे समय तक बीमार पड़े रहने, हृदय की किसी बीमारी तथा क्षय रोग के कारण लाक्षणिक निम्न रक्तचाप हो जाता है।

जब तक व्यक्ति बिस्तर में लेटा रहता है, उसका रक्तचाप ठीक रहता है पर ज्यों ही वह बिस्तर से उठता है तो उसे निम्नरक्तचाप हो जाता है। इसलिए इसे राइजिंग का नाम दिया जाता है। यह विशेषकर शारीरिक तौर पर कमजोर तथा पतली औरतों को होता है, उठने पर उन्हें चक्कर आने लगते हैं।पतले लम्बे व्यक्तियों जिनको भूख कम लगती है, जिनके भोजन में प्रोटीन तत्व बहुत कम होते हैं, कब्ज वाले रोगियों तथा रक्तहीनता वाले रोगियों को भी यह रोग हो जाता है।

– शेष अगले अंक में

बाल बोध

विद्यार्थी जीवन में प्राणायाम का महत्त्व

गतांक से आगे –

जैसे पावर हाऊस में विद्युत का एक केन्द्र होता है। वहां से बिजली अनेक स्थानों में जाती है और फिर विद्युत से सब यन्त्र कार्य करने लगते हैं। वैसे ही प्राणायाम करने से ऊर्जा ऊपर की ओर उठती है। जिससे समर्थता आती है। अगर कोई व्यक्ति साहित्य, संगीत, कला या किसी भी क्षेत्र में विशेष कार्य करना चाहता है, तो उसे भ्रामरी प्राणायाम से सभी कार्यों में सफलता मिलती है।

नाड़ीशोधन प्राणायाम : लोम-विलोम प्राणायाम अर्थात् नाड़ीशोधन की प्रक्रिया। नासिका के दोनों छिद्रों से श्वासों का आवागमन होता है। लेकिन एक समय में एक ही छिद्र से श्वास आता और जाता है। एक घण्टा दस मिनट तक एक छिद्र से श्वास आता है, फिर दूसरे छिद्र से आता है। दाएं छिद्र से आने वाले श्वास को सूर्य श्वास कहते हैं और बाएं को चन्द्र श्वास कहा जाता है। इसी तरह मस्तिष्क भी दो भागों में विभक्त है, दायां और बायां। जिसका दायां भाग जागृत है, वह अर्टिस्ट होगा, कलाकार अच्छा होगा। लेकिन कल्पना ज्यादा करेगा, स्वप्न देखेगा और कर्मठता से दूर रहेगा। ऐसे लोग हिसाब-किताब में भी कमजोर होते हैं। उनकी दिमागी हालत भी ज्यादा सुदृढ़ नहीं होती। अगर कोई लॉजिक बात करे तो उनको समझ नहीं आती। इसके विपरीत जिनका बायां मस्तिष्क जागृत है, वे कर्मशील होते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वप्न न देखकर कर्म करने में विश्वास रखता है। भक्ति के कार्यों में भी वह सेवा की जिम्मेदारी निभाता है। लाजिक बातों को

....विद्यार्थी जीवन में कपालभाति प्राणायाम बहुत उपयोगी है। इससे डिप्रेसन और तनाव दूर होता है। कोशिकाएं और सैल्स ताजा रहते हैं। इस प्राणायाम को करने की विधि इस प्रकार है- अपने आसन पर बैठकर श्वास को बाहर फैंकना है। जब श्वास बाहर फैंकोगे तो स्वयं अन्दर आएगा। आप बाहर फैंकते रहिए, श्वास अन्दर आने दीजिए। यह क्रिया थोड़ी देर तक करते रहिए। यूं तो कपालभाती प्राणायाम तीन सौ बार भी किया जा सकता है। लेकिन आप प्रारंभ में केवल तीन मिनट ही कीजिए। तीन बार कीजिए और फिर निरन्तर अभ्यास करें तो धीरे-धीरे आगे बढ़ाते जाईए।......

समझकर, क्रियान्वित करने का सफल प्रयास करेगा। इसलिए एक मस्तिष्क जागृत होने से सफलता नहीं मिलती। दोनों को सजग होना जरूरी है।

लोम-विलोम प्राणायाम : लोम-विलोम प्राणायाम करने से पूर्व यह देख लेना चाहिए कि अगर चन्द्र श्वास चल रहा है, तो आप दाएं छिद्र में श्वास भरकर बाएं छिद्र से बाहर निकालिए।

श्वास भरकर दाएं छिद्र को बंद करने पर ही बाएं छिद्र से श्वास बाहर निकलेगा। यह प्रक्रिया दस बार कीजिए। इसके बाद शांत होकर बैठिए। पुन: इसके विपरीत क्रिया करें। बाएं छिद्र से श्वास भरकर दाएं से बाहर निकालिए। यह प्रक्रिया भी दस बार कीजिए।

लोम-विलोम प्राणायाम को नाड़ी शोधन क्रिया कहते हैं। क्योंकि रीढ की हड्डी में जो सुषुम्ना नाड़ी है, वह इस प्राणायाम से शुद्ध होती है। दोनों मस्तिष्क जागृत होते हैं। बुद्धि तीव्र होती है और इंसान सफलता प्राप्त करता है।

भस्त्रिका प्राणायाम : नाड़ी शोधन करने के बाद भस्त्रिका प्राणायाम कीजिए। जैसे लोहार धौंकनी चलाता है। हवा भरता है और छोड़ता है। वैसे ही फेफड़ों में श्वास भरिए, फिर छोड़ दीजिए। श्वास भरिए, छोड़ दीजिए। ऐसा थोड़ी देर करने के बाद विश्राम की स्थिति में आ जाइए। शांत होकर मस्तिष्क के मध्य भाग में ध्यान टिकाइए। ध्यान मस्तिष्क पर रहे और क्रिया चलती रहे। क्योंकि कोई भी क्रिया तभी सफल होती है जब उसमें मन का भी योग हो। मन तभी लगता है जब ध्यान हमारा मस्तिष्क के मध्य भाग में लगा हो। भस्त्रिका प्राणायाम से हमारा तीसरा मस्तिष्क जागृत होता है। तीसरी मस्तिष्क सिर के पिछले हिस्से में होता है। इस प्राणायाम से तीनों मस्तिष्क एक साथ वाइब्रेट हो जाएंगे।

कपालभाती प्राणायाम : चौथा प्राणायाम कपालभाती है। विद्यार्थी जीवन में यह बहुत उपयोगी है। इससे डिप्रेसन और तनाव दूर होता है। कोशिकाएं और सैल्स ताजा रहते हैं। इस प्राणायाम को करने की विधि इस प्रकार है- अपने आसन पर बैठकर श्वास को बाहर फैंकना है। जब श्वास बाहर फैंकोगे तो स्वयं अन्दर आएगा। आप बाहर फैंकते रहिए, श्वास अन्दर आने दीजिए। यह क्रिया थोड़ी देर तक करते रहिए। यूं तो कपालभाती प्राणायाम तीन सौ बार भी किया जा सकता है। लेकिन आप प्रारंभ में केवल तीन मिनट? ही कीजिए। तीन बार कीजिए और फिर निरन्तर अभ्यास करें तो धीरे-धीरे आगे बढ़ाते जाईए।

डिप्रेसन और तनाव को दूर करने की यह अचूक औषधि है। जैसे विद्यार्थी एक-दूसरे का मजाक उड़ा देते हैं, ताना-कशी करते हैं। उससे बच्चे के मन में डर बैठ जाता है। फिर वह जिंदगी में आगे बढ़ने की बजाय पीछे हटने लगता है। उसके मन में नकारात्मक विचार आने लगते हैं कि मैं जिन्दगी में आगे नहीं बढ़ पाऊंगा, कोई मेरा साथ नहीं देता और अब मेरे से कुछ होने वाला नहीं है। इस तरह की विचार धारा मन में आने लगती है। बहाने बनाना शुरू कर देता है, मैं आज नहीं पढ़ूंगा, कल ऐसा करूंगा। इस स्कूल में नहीं पढ़ूंगा, उसमें पढ़ूंगा और यहां मेरे अच्छे नम्बर नहीं आते। कोई मेरी मजाक न उड़ाए इस तरह का डर लगा रहता है। हर समय वह तनाव में रहता है। रात को नींद कम आने लगती है, सपने ज्यादा आते हैं। लेकिन कपालभाती प्राणायाम करने से ये सब रोग दूर होते हैं और विद्यार्थी सफलता की सीढ़ियां चढ़ता चला जाता है। इन प्राणायामों के करने से व्यक्ति शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति प्राप्त करता है।

प्रथम पृष्ठ का शेष 137वें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस .....

दीपावली का दिन आर्यों का सबसे बड़ा प्रेरणा पर्व – सत्यानन्द आर्य

चिंतन देने वाले महर्षि देव दयानंद थे। उस राष्ट्रीय चिंतन के चार मुख्य स्तंभ थे, एक था स्वराज्य, दूसरा स्वदेशी, तीसरा स्वभाषा और चौथा स्तंभ सामाजिक क्षमता थी। आज आर्थिक चिन्तन, राजनीतिक चिंतन और सामाजिक चिंतन की जरूरत है। महर्षि के बताए रास्ते पर चलकर ही स्वराज्य मिला और उनके अनुसार ही रामराज्य मिलेगा। श्री अजय सहगल जी, उपप्रधान आर्य केंद्रीय सभा, ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि मेरा सम्बन्ध ऋषि के जन्म स्थान से है और आज उनका निर्वाण उत्सव है। ऋषि को शिवरात्रि के दिन आत्मबोध और सत्य बोध हुआ और वे सच्चे शिव की खोज में निकल पड़े और मुड़कर फिर घर नहीं देखा। सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म, संस्कृति, वेदोद्धार, मानवोद्धार और कल्याण के लिए समर्पित किया। अपने लिए कुछ न चाहा, न मांगा, न कोई संग्रह किया, न कोई चेला न कोई चेली बनाई। ऋषि ने न कोई पंथ व सम्प्रदाय चलाया। वे सारा जीवन जहर पीते रहे और पत्थर खाते रहे तथा बदले में संसार को सीधा, सरल और सच्चा मार्ग बताते रहे। ऐसे ऋषिवर को शत-शत नमन। श्री जोगिंदर खट्टर जी, मंत्री आर्य केंद्रीय सभा और महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम ने बहुत ही प्रेरणादायक विचार रखते हुए कहा-मंच पर उपस्थित विद्वत्गण, अधिकारी गण, हमारे कार्यकर्त्ताओं की टीम और यज्ञ में सम्मिलित होने वाले सभी यज्ञप्रेमी, गुरुकुल के छात्र -छात्राएं और हमारे बहनों और भाईयों, आज हम लोग महर्षि दयानंद के 137वें निर्वाण उत्सव पर एकत्रित हुए हैं। महर्षि दयानंद के बारे में आप सभी ने इतिहास में बहुत कुछ पढ़ा। लेकिन न तो ऐसा कोई ऋषिवर हुआ, न तो ऐसा कोई संन्यासी हुआ और न ही आने वाले समय में होने की कोई सम्भावना है। कम से कम अब तो आने वाला समय ऐसा है ही नहीं कि इस प्रकार

वर्तमान में घट रही सामाजिक घटनाओं के चलते बार-बार याद आती है ऋषिवर दयानन्द की - कीर्ति शर्मा

का कोई तपस्वी पैदा हो जाए। महर्षि दयानंद सरस्वती ने समाज सुधार का जो कार्य किया, मेरे विचार में ऐसा समाज सुधारक भी कभी पैदा नहीं होने वाला। ऐसे महान ऋषि को शत-शत नमन।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने कोरोना काल में इस भव्य आयोजन के लिए आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली प्रदेश के सभी अधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि हमारे बीच में जो छात्र-छात्राएं बैठे हैं और आर्य परिवारों के नौजवान बैठे हैं, आज इस यज्ञ को करने के लिए, वे बड़े सौभाग्यशाली हैं कि इस अवसर पर यज्ञ में उनको भी भाग लेने का सौभाग्य मिला। बंधुओं आज हमारे आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान और हमारे संरक्षक महाशय धर्मपाल जी उपस्थित नहीं हुए, मैं उनकी ओर से उनका आशीर्वाद आप सभी को देता हूं, वे चाहते थे कि कार्यक्रम अवश्य हो, इसका प्रसारण देश-दुनिया में होता रहे। मैं उनकी ओर से दीपावली की शुभकामनाएं भी देता हूं। श्री विनय आर्य जी ने इस अवसर पर यज्ञ के उपरांत विशेष उद्बोधन देते हुए ऋषि दयानंद जी को नमन करते कहा कि ऋषि के अधूरे कार्यों को पूरा करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। ऋषि ने अपने हत्यारे को भी अभयदान दिया था और उनकी प्रेरणा से आर्य समाज के इतिहास को यदि चार भागों में बांटकर देखा जाए, तो पता चलता है कि ऋषि निर्वाण के बाद उनसे प्रेरणा लेने वाले हमारे प्रथम पंक्ति के महापुरुषों ने जो कार्य किए, उसके बाद देश की आजादी के समय बटवारे में आर्य समाज की शक्ति कम हुई और उसके बाद हम कहां से कहां आ गए, हमें चिंतन करना होगा। आर्यसमाज के युवाओं और समस्त अधिकारियों का आर्यसमाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए संकल्प भी करना होगा।

सांय 5.25 यज्ञ ब्रह्मा श्री शिवा शास्त्री जी के नेतृत्व में एक सौ यज्ञिकों ने बहुत सुंदर यज्ञ किया। श्री नरेंद्र गांधी जी, श्रीमती शिखा व श्री प्रणव आर्य, श्रीमती अंजलि एवं श्री संजीव आर्य, श्रीमती शारदा कत्याल, प्रधाना आर्य समाज माडल टाउन, श्रीमती हिना व श्री विभु आर्य, श्रीमती अंजू आर्य, श्रीमती राजश्री एवं श्री बहस्पति आर्य, महामंत्री आर्यवीरदल, तथा आ.आर्ष आर्य मुख्य यजमान थे। यज्ञ के उपरांत वैदिक विद्वान डॉ. कमलदीप शास्त्री जी ने अपना उद्बोधन दिया।

श्री विनय आर्य जी ने महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपने प्रेरणादायक विचार रखें तथा महर्षि देव दयानंद जी के अंतिम समय में प्रेरणादायक कार्य का विस्तृत वर्णन किया शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। यह कार्यक्रम आर्य संदेश पर प्रसारित किया गया इसका संयोजन महामंत्री आर्य सतीश चड्ढा ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित श्री योगेश आर्य जी, श्री सुरिन्द्र चौधरी जी तथा श्री जितेंद्र बनाती जी ने संयोजन में सहयोग दिया। इस कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में सर्वश्री धर्मवीर, शैल कुमार, विकास, महेश, राजवीर, मोहित, लक्ष्य, सत्यप्रिय, गोपी एवं सोनू ने विशेष सहयोग दिया। महाशय धर्मपाल मीडिया सेंटर की पूरी टीम ने इस कार्यक्रम को लाइव दिखाने में पूरा सहयोग दिया। मैं सभा के सभी अधिकारियों, सहयोगियों, कार्यकर्ताओं, संवर्धकों और मीडिया टीम का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

– सतीश आर्य, महामन्त्री,
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

137वें निर्वाण दिवस के अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते सर्वश्री सत्यानन्द आर्य जी, कीर्ति शर्मा जी, अजय सहगल जी, जोगेन्द्र खट्टर जी एवं श्री सतीश आर्य जी

137वें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के सुसज्जित मंच से भजन प्रस्तुत करती सुश्री संजलि आर्या जी।

इस अवसर पर सामूहिक यज्ञ सम्पन्न कराते श्री शिवा शास्त्री जी, श्री सत्यप्रिय जी एवं निर्देशन करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी।

प्रथम पृष्ठ का शेष सभा कार्यालय में महर्षि दयानन्द....

संबंधित कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ। यज्ञ में जहां एक तरफ समस्त कार्यकर्ताओं अधिकारियों ने अपने आहुतियां दीं, वही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्वर्धक श्री दिनेश आर्य जी, शिवा शास्त्री जी और श्री धनंजय शास्त्री जी ने विधिवत यज्ञ कराया। इस अवसर पर भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य जी ने महर्षि दयानंद के उपकारों को याद करते हुए मधुर भजन प्रस्तुत किए। उपस्थित सभी महानुभावों ने भजनों के माध्यम से महर्षि दयानंद सरस्वती जी की महिमा और प्रेरणाओं का गुणगान किया। इसके उपरांत सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने सभी विभागों के प्रबंधकों, कार्यकर्ताओं का परिचय देते हुए सभी को मंगलमय शुभकामनाएं दीं। साथ ही दीपावली का उपहार देने हेतु सभा के प्रधान, कोषाध्यक्ष, उप प्रधान, महामंत्री एवं मंत्री उपस्थित रहे। सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के लोक उपकारी कार्यों को स्मरण करते हुए सभी को उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। प्रेम सौहार्द के वातावरण में प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों और कार्यकर्त्ताओं ने भोजनोपरान्त एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हुए अपने अपने घरों की ओर प्रस्थान किया।

गतांक से आगे –

निराशा – कारण एवं निवारण

– डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

विकलांगता

प्रत्येक युवा मन की यह इच्छा होती है कि मैं सब से आगे बढ़ जाऊं। परन्तु जब कोई विकलांग युवा हिम्मत कर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है तो दूसेर लोग उसका उपहास करने लगते हैं। परन्तु साहस और पुरुषार्थी व्यक्ति विकलांग होते हुये भी अनेक क्षेत्रों में आगे बढ़ जाता है। विकलांग लोगों ने एवरेस्ट की चोटी पर भी अपने कदम रखे हैं। अनेक खेलों में विकलांग प्रशंसनीय पदक प्राप्त करते हैं। यह देखा जाता है कि व्यक्ति की ऊर्जा विकलांग क्षेत्र को उल्लंघन कर दूसरी ज्ञानेन्द्रिय को सबल बना देती है। गुरु विरजानन्द जी जन्मान्ध होते हुये भी व्याकरण के सूर्य थे। इग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध कवि मिलन, सन्त सूरदास को कौन नहीं जानता।

....कई बार ऐसा भी होता है जब आपका पक्ष न्यायोचित और जनहित के अनुकूल हो और आपकी बात को सही मानते हुये भी समझदार लोग उपेक्षा करते हैं तथा विरोधी पक्ष वाले विरोध करते हैं। आपने बहुत प्रयत्न एवं परिश्रम से कोई योजना बनाई है परन्तु उसे एक बार में ही अनुपयोगी बता दिया जाये उस समय आक्रोश तथा निराशा के भाव प्रकट होते हैं। इसमें अनेक कारण हैं। प्रभावशाली व्यक्ति आपसे सहमत इसलिये नहीं होते कि उनका अहं आड़े आने लगता है। वे सोचते हैं कि यह साधारण सा व्यक्ति हमारा मार्गदर्शन करने लगा तो हमें फिर कौन पूछेगा। कुछ लोगों को आपकी बात इसलिये सहन नहीं होती कि उनका स्वार्थ पूरा होने में आप बाधक बन जाते हैं। कुछों का काम ही विरोध करना है।....

प्रतियोगी परीक्षा या साक्षात्कार में सफल न होना

प्रतियोगी परीक्षाओं में मैरिट के आधार पर जितने प्रत्याशियों की आवश्यकता है उतने लोगों का चयन होता है। इसलिये किसी विषय में पीछे रह जाने पर निराश नहीं होना चाहिये। लाखों परीक्षार्थियों में से हजारों का या उससे भी कम चयन होता है। सब लोग जीनियस नहीं हो सकते। उन्हें दूसरे क्षेत्र में अपना भाग्य चमकाना चाहिये अथवा पहली परीक्षा से अनुभव प्राप्त कर अगले वर्ष के लिये कठोर परिश्रम करना चाहिये। साक्षात्कार में सफलता के लिये पूरी तैयारी, आत्मविश्वास और किसी विशेषज्ञ से सहायता ली जा सकती है।

शारीरिक दुर्बलता

शारीरिक दुर्बलता भी अनेक बार निराशा की ओर धकेल देती है। साक्षात्कार के समय इसका अधिक ध्यान रखा जाता है। आजकल कम्पनियां अच्छा वेतन देती हैं परन्तु कार्य के घण्टे बढ़ा दिये जाते हैं। जो मजबूत कद काठी और दबंग प्रकृति का प्रभावशाली युवक है प्राय: उसको ही प्राथमिकता दी जाती है। और भी कारण हो सकते है।

दुर्बलता को दूर करने के लिये युवावस्था के प्रारम्भ में ही ध्यान देने की आवश्यकता है। आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य से शरीर को धारण करने वाले तीन स्तम्भ हैं। व्यायाम इन तीनों को बल प्रदान करता है। इसलिये इन चारों बातों का ध्यान रखते हुये शरीर का निर्माण करने से निराशा कर भाव छूमन्तर हो जायेगा।

हीनता की भावना

प्रतियोगिता में दूसरों से पीछे रह जाना, अन्य लोगों द्वारा हतोत्साहित किया जाना, अपनी कोई दुर्बलता, दुर्व्यसन आदि होने पर व्यक्ति में हीन भावना आ जाती है और वह ऐसा सोचने लग जाता है कि मैं अमुक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसे समय में उसे किसी मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। जो उसकी प्रसुप्त क्षमताओं को जाग्रत कर सके। जीवन में उतार चढ़ाव आते ही रहते हैं। यदि कोई दुर्व्यसन–मद्यपान, नशा करना आदि है तो उसे तुरन्त छोड़ दें। लोग आपके विषय में क्या कहते हैं इसकी चिन्ता न करें।

जीवन में कुछ करना है तो,
मन के मारे मत बैठो।
आगे आगे बढ़ना है तो,
हिम्मत हारे मत बैठो।।

बड़े लक्ष्य का पूरा न होना

किसी भी युवक की महत्त्वकांक्षा कोई बड़ा कार्य करके दिखाने की होती है। लक्ष्य बड़ा बनाना गलत नहीं है परन्तु उसे क्रियान्वित करने के लिये मार्ग कितना लम्बा है। इसे पार करने में कितना समय लगेगा और कितने साधनों की आवश्यकता होगी इस पर भी पूरा विचार कर लेना चाहिये। कहा भी है

धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सो घड़ा ऋतु आये फल होय।।

– शेष पृष्ठ 7 पर

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

Continue From Last issue

...... He organized assistance to the orphans, widows and victims of religion intolerances and cruelty, wherever and whenever required. The miserable condition of the Hindu widows attracted the attention of Mahatma Ji. He supported remarriage of the widows and also lent his heartiest support in starting the widows ashram. While affording protection to the weaker sections of society. He raised the status of some so called untouchables, Mahatma Hans Raj was a stomach believer of the VEDAS which teach the brotherhood of mankind and promote love, service, purity and all other virtues which are necessary to uplift the whole humanity. ......

As a result of their untiring efforts, about one lakh Malkana Rajputs rejoined Hinduism. He worked for the regeneration of Hindu religion in several other ways. He condemned rigidity of caste system, idol worship and its evils, untouchability, degeneration due to non-observation of Brahmacharya and many other social evils prevailing in the Hindu society. He also created employment opportunities for the needy Hindus and other weaker sections of society.

He message to the youth of this country was to observe Brahmacharya. They were exhorted to keep pure in thought, word and deed and pay special attention to their health. They were also advisedto pay their full attention to the acquisitions of knowledge and implement moral instructions imported to them in their life. Even after retirement as the Principal of the D.A.V. College, LAHORE, he kept contact with the youth of the college, took interest in their educational matters and kept them away from the influence of Christian missionaries.

Mahatma Hans Raj took great interest in the sphere of social service. He offered his willing and heartfelt sympathy and services at all times in all calamities, which included earthquakes, communal riots, famine, plague, floods and other adversities in the life of the poor and depressed people. He organized assistance to the orphans, widows and victims of religion intolerances and cruelty, wherever and whenever required. The miserable condition of the Hindu widows attracted the attention of Mahatma Ji. He supported remarriage of the widows and also lent his heartiest support in starting the widows ashram. While affording protection to the weaker sections of society. He raised the status of some so called untouchables, Mahatma Hans Raj was a stomach believer of the VEDAS which teach the brotherhood of mankind and promote love, service, purity and all other virtues which are necessary to uplift the whole humanity.

After his retirement for the college where he worked for 25 years in an honorary capacity, he gave his full attention to the noble work of VED prachar and other activities ofArya Samaj. He travelled for and wide and went wherever the call of duty demanded. The work of VED prachar was a pure and prominent work for him and he made great and untiring efforts in this direction. He felt great pleasure in doing this works. However, this overwork and the advancing age put a great strain upon his health.

In the KUMBH MELA of 1938. Mahatma Hans Raj went to Hardwar accompanied by vedic preachers and singer. These they carried out preachings in the camps of pilgrims and on the banks of GANGA. An epidemic of cholera broke out during that time and Mahatmaji became a victim of this terrible disease. He became very weak and was taken to solan district in Himachal Pradesh. He became well to some extent and returned to Lahore. But after sometime his health deteriorated further and he got seriously ill. He could not recover from his illness in spite of best treatment available to that time. Consequently, he breathed his last on 15-11-1938 at 11 at night in the presence of his close companions and family members. The news of his death spread like wild fire. A very his procession, the like of which was never seen before, was taken out at Lahore and his body was cremated at the banks of river RA VI, with Vedic rites.

Mahatma Hans Raj was indeed a true Sanyasi a champion of Hindu widows, a great religious and social reformer, a great teacher and preacher ofvedic principles and a stomach benefactor of Hindu society. Truly, he was a leading light and an outstanding leader of the ARYA SAMAJ.

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

ठ का शेष

पृष्ठ 2 का शेष

घाटी को फिर से सुलगाने की ...

पंचायतों की बही खाते की देखरेख के लिए दो हजार से ज्यादा अकाउंटेंट की भर्ती प्रक्रिया शुरू की गई है। इसके अतिरिक्त पुल, सडकें, शोपिंगमॉल बन रहे हैं। अलगावादियों की दुकानें बंद हो चुकी हैं तो इन लोगों को अब दुबारा अपनी राजनीति के लिए जमीन चाहिए और वो जमीन है आतंक और अनुच्छेद 370। क्योंकि इसी अनुच्छेद की आड़ में ये लोग फिर से युवाओं को मजहबी घुट्टी पिलाकर उनके हाथों से कलम लेकर बारूद थमा देना चाहते है। इसलिए इनकी एकता का यह बेमेल घोषणापत्र राज्य के विकास के लिए नहीं बल्कि अपनी कट्टर मजहबी दुकानदारी का प्रमाण पत्र है। आतंक पर महबूबा का बयान अपनी राजनितिक दुकान बंद होने का शोकपत्र है।

- सम्पादक

शोक समाचार

श्री ओम प्रकाश घई जी का निधन

आर्यसमाज डी ब्लॉक, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 के पूर्व प्रधान एवं वर्तमान कोषाध्यक्ष, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के संरक्षक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सभा के विशेष आमन्त्रित सदस्य श्री ओमप्रकाश जी घई का 15 नवंबर, 2020 को निधन हो गया। उनकी स्मृति शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धंजलि सभा 18 नवंबर, 2020 को सम्पन्न हुई।

श्री हरिओम बंसल जी को मातृशोक

आर्यसमाज झिलमिल कोलोनी के प्रधान एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के मन्त्री श्री हरिओम बंसल जी की पूज्य माताजी श्रीमती कान्तिदेवी बंसल आर्या जी का 14 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 नवम्बर, 2020 को सम्पन्न हुई।

श्री यशपाल आर्य जी को पितृशोक

आर्यसमाज हडसन लाइन किंगजवे कैम्प से सम्बन्धित श्री यशपाल आर्य जी के पूज्य पिता श्री मुलखराज धींगड़ा जी का दिनांक 14 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 नवम्बर को वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक में सम्पन्न हुई।

श्री राधेश्याम शर्मा जी का निधन

डी.ए.वी. कॉलेज मैंनेजमैंट कमेटी के महामन्त्री श्री राधेश्याम शर्मा जी का 16 नवम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 17 नवम्बर को निगम बोधघाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 नवम्बर, 2020 को सम्पन्न हुई।

श्री रामचन्द्र वर्मा जी का निधन

एटा निवासी, ऋषि दयानंद के पथगामी, गुरुकुलों के हितैषी आर्य समाजी श्री राम चन्द्र वर्मा जी का 10 नवंबर को 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। राम चन्द्र वर्मा जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री शीतला प्रसाद आर्य जी का निधन

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन के कर्मठ सदस्य एवं पूर्व अधिकारी श्री शीतला प्रसाद आर्य जी का दिनांक 9 नवम्बर, 2020 को 102 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री यशपाल आर्य जी का निधन

आर्यसमाज नाई की मंडी आगरा (उत्तर प्रदेश) के संरक्षक श्री यशपाल आर्य जी 'गुरुजी' का दिनांक 24 अक्तूबर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री श्याम सुन्दर अरोड़ा जी का निधन

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 के सदस्य श्री श्याम सुन्दर अरोड़ा जी का दिनांक 11 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 13 नवम्बर, 20 को आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 6 का शेष

जब एक बार लक्ष्य निर्धारित कर लिया तो उसी का चिन्तन करें। एक साथ अनेक कार्य करने से एक भी समय पर पूरा नहीं होता।

अपराध बोध की भावना

जीवन पथ पर चलते हुये कहीं पर ठोकर लगने की भी सम्भावना रहती है। गलतियाँ किस से नहीं होती। कई बार घर वालों की डाट-फटकार, सामाजिक अपयश और साथियों में उपहास के कारण व्यक्ति लज्जित होकर एकान्त में बैठ जाता है। यह खतरनाक स्थिति है। कोई भी अनहोनी घटना हो सकती है। ऐसे समय उसे आश्वासन और सहानुभूति की आवश्यकता होती है। हितैषियों का कर्त्तव्य है कि उसे धैर्य धारण करने और आगे से ऐसे गलत कार्य न करने का संकल्प करायें। जो भूलों से शिक्षा लेकर पुनः सन्मार्ग पर चलने लगता है। लोग फिर उसे सम्मान देने लगते हैं। व्यक्ति स्वयं प्रायश्चित्त कर पुनः अच्छे कार्य में लग जाये तो अपराध बोध की भावना स्वयं ही समाप्त हो जायेगी।

अपना पक्ष सही होने पर भी जब उसका समर्थन नहीं मिले या लोग विरोध करने लगें।

कई बार ऐसा भी होता है जब आपका पक्ष न्यायोचित और जनहित के अनुकूल हो और आपकी बात को सही मानते हुये भी समझदार लोग उपेक्षा करते हैं तथा विरोधी पक्ष वाले विरोध करते हैं। आपने बहुत प्रयत्न एवं परिश्रम से कोई योजना बनाई है परन्तु उसे एक बार में ही अनुपयोगी बता दिया जाये उस समय आक्रोश तथा निराशा के भाव प्रकट होते हैं।

इसमें अनेक कारण हैं। प्रभावशाली व्यक्ति आपसे सहमत इसलिये नहीं होते कि उनका अहं आड़े आने लगता है। वे सोचते हैं कि यह साधारण सा व्यक्ति हमारा मार्गदर्शन करने लगा तो हमें फिर कौन पूछेगा। कुछ लोगों को आपकी बात इसलिये सहन नहीं होती कि उनका स्वार्थ पूरा होने में आप बाधक बन जाते हैं। कुछों का काम ही विरोध करना है।

यह कोई आवश्यक नहीं कि सभी लोग आप से सहमत होवें। आपको धैर्य से अपनी बात को प्रस्तुत करना चाहिये। हो सकता है लोग जो कि विरोध कर रहें हैं वे जब शान्त मन से विचार करेंगे तो आपका पक्ष न्यायोचित है यह समझ में आ जायेगा। यदि फिर भी बात नहीं बनती है तो भी चिन्ता न करें। आपने अपनी बात कह दी। इसके समर्थन की अपेक्षा न की जाये तो अच्छा रहेगा। गीता कहती है **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**

आप अपने पक्ष को मजबूती से जनता के सामने प्रस्तुत करते रहें और अपना निश्चय दोहरायें-

छल कपट मिटाना है जग से
प्रभु हिम्मत दो हमको
जो ठाने हम अपने मन में
उसे पूरा कर दिखलाये।
जग से भ्रष्टाचार मिटायें
सक्षम कर दो जन को।।

पृष्ठ 3 का शेष

आस्था कोई कपड़ा नहीं, जो आप इसे कपड़े की तरह बदल लें। अगर कोई ऐसा करता है तो धर्म और घर से बहिष्कृत कर दिया जाएगा। ये कतई उचित नहीं। ये रिश्ता बनाना समाज के लिए भी हितकर। ये हिंदू मुस्लिमों पर अच्छा असर नहीं डालेगी। अंतर धार्मिक शादी करने के बाद ना तो तुम देश की सेवा के लायक रह जाओगे और ना ही फीनिक्स आश्रम में रहकर इंडियन ओपिनियन वीकली निकाल सकोगे। तुम्हारे लिए भारत आना मुश्किल हो जाएगा। मैं बा से तो इस बारे में कह भी नहीं सकता, वो तो इसकी अनुमति देने से रहीं।

असल में गांधीजी भारत में इस शादी की प्रतिक्रिया को लेकर चिंतित थे। पत्र में बेटे को इतनी खुराक देने के बाद आगे और तगड़ा डोज दिया, तुम क्षणिक सुख के लिए ही ऐसी शादी के बारे में सोच रहे हो, जबकि तुम्हें मालूम नहीं कि वास्तविक सुख क्या है। अब वास्तविक सुख तो उनकी तरह हर वर्ष एक अलग महिला के साथ सोकर अखंड ब्रह्मचर्य की खोज में ही हो सकता होगा जो उन्होंने खुद भोगा बाकि के लिए चरखा और गीत छोड़ गये सबको सन्मति दे भगवान।

- राजीव चौधरी

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 16 नवम्बर, 2020 से रविवार 22 नवम्बर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19-20/11/2020 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 नवम्बर, 2020

प्रतिष्ठा में,

आर्य संदेश टीवी चैनल

www.AryaSandeshTV.com

24 घंटे चलने वाला आपका अपना चैनल

पर उपलब्ध

प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 योग एवं स्वास्थ्य
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन बेला
प्रात: 9:00 श्री राम कथा
प्रात: 9:30 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 योग एवं स्वास्थ्य
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव
सायं 5:00 योग एवं स्वास्थ्य
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 भजन बेला
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात:4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव

नोट : विशेष स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। *– व्यवस्थापक*

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें।

एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं - https://bit.ly/2OWyt2x

वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज कालकाजी
नई दिल्ली-110019

प्रधान : श्री रामचन्द्र कपूर
मंत्री : श्री राकेश भटनागर
कोषाध्यक्ष : श्री प्रवीण रेलन

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की सच्चाई

यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला?

लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।

आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच –सच

1919·CELEBRATING·2019
1919· शताब्दी उत्सव ·2019
100
Years of affinity till infinity
आत्मीयता अनन्त तक

बिना डंडी के स्पेशल क्वॉलिटी की मिर्चों से तैयार
देगी मिर्च

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह